[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 74 अंक : 10
सृष्टि संवत् 1960853118
4 जून, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

वर्ष–74, अंक : 10, 1-4 जून 2017 तदनुसार 22 ज्येष्ठ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

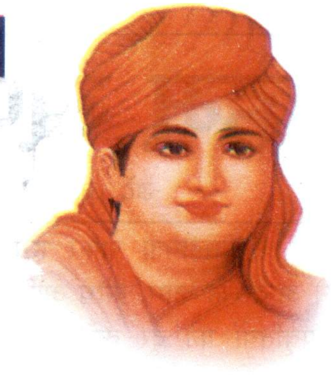

# जीव का लक्ष्य महान् संग्राम

-ले० स्वामी वेदानन्द ( दयानन्द ) तीर्थ

**स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः।**
**जातं यत्त्वा परि देवा अभूषन्महे भराय पुरुहूत विश्वे।।**
**-ऋ० ३।५१।८**

**शब्दार्थ-हे इन्द्र** = ऐश्वर्याभिलाषी जीवात्मन् ! **सः** = ऐसा तू **इह** = इस संसार में **वावशानः** = निरन्तर कान्तिमान् होता हुआ, अपने **सखिभिः** = मित्र **मरुद्भिः** = प्राणों के साथ **नः** = हमारे **सुतम्** = निष्पादित **सोमम्** = सोम की **पाहि** = रक्षा कर, **यत्** = क्योंकि हे **पुरुहूत** = अनेक मनुष्यों से स्पर्धनीय ! **विश्वे + देवाः** = सब देव **जातं + त्वा** = प्रकट हुए तुझको **महे + भराय** = महान् संग्राम के लिए **परि + अभूषन्** = सब ओर से अलंकृत करते हैं।

**व्याख्या**-यह मन्त्र जीवन को संग्राम बताता है। संग्राम में विजय पाने के लिए मरने-मारने में तत्पर मित्रों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जीव को ऐसे संग्राम में जूझना है, जिसमें उसे आक्रमण की अपेक्षा रक्षा-कार्य अधिक करना है। उस अवस्था में तो मर मिटने वाले मित्रों की और भी अधिक आवश्यकता है। जीव को भगवान् ने ऐसे साथी दिये हैं जो सदा इसके सङ्ग रहते हैं, मुक्ति होने तक साथ बने रहते हैं। वे हैं मरुत् = प्राण. प्राण आत्मा के साथ सदा बने रहते हैं। इन प्राणों को अपना सखा बनाना आत्मा का कार्य है। इनको सखा बनाकर प्राप्त की रक्षा करना और अप्राप्त को प्राप्त करना जीव का कर्त्तव्य है। जीव के सामने एक महान संग्राम है। भगवान् ने इस संग्राम के लिए इसके चारों ओर देवों को खड़ा कर दिया है। जीवन-संग्राम में ये देव इसके सहायक हैं। इसके सखा प्राणों ने इसके लिए ब्रह्मामृत रस तैयार किया है। उसकी यदि यह रक्षा कर ले, तो अपने साथियों के सहयोग से रक्षित सोम का पान करने से यह अमृत हो जाएगा, अन्यथा जन्म-मरण का जञ्जाल सिर पर है ही।

ब्राह्मणग्रन्थों तथा उपनिषदों में इस जीवन-संग्राम का अनेक बार, विविध प्रकार से वर्णन हुआ है। वहाँ इस संग्राम को देवासुर-संग्राम कहा गया है। देवों और असुरों का सदा ही युद्ध ठना रहता है। अनेक बार ऐसा प्रतीत होता है कि देव हार जाएँगे, किन्तु अन्त में देवों का ही विजय होता है। होना ही चाहिए, क्योंकि देव सत्पक्षावलम्बी का नाम है। संसार का यह नैसर्गिक नियम है कि **'सत्यमेव जयते नानृतम्'** = सदा सत्य का विजय होता है, न कि झूठ का और **'सत्यमेव देवाः'** (शत० १।१।१।४) = देव सत्यस्वरूप ही होते हैं।

ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों तथा अन्य आर्षग्रन्थों में जहाँ-जहाँ भी देवासुर-संग्राम की चर्चा है, वहाँ सब जगह यह भी लिखा है कि देवों ने **विष्णु को आगे करके** विजय पाया। इन्द्रसमेत देव विष्णु के पास जाते हैं। सचमुच विष्णु = परमदेव भगवान् [**'विष्णुर्वै देवानां परमः'** (शत०) = विष्णु सब देवों में से श्रेष्ठ हैं] के सहयोग के बिना किसी शुभ कार्य में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। इस तत्त्व को देवस्वभाव मनुष्य सदा सामने रखते हैं। जीव = इन्द्र देवराज हैं, असुरों = पापभावों से इसे युद्ध करना है। निःसन्देह देव-दिव्यभाव इसके सहायक हैं, किन्तु जब तक यह परमदेव की सहायता प्राप्त नहीं करता, तब तक विजय सन्दिग्ध है। **( स्वाध्याय संदोह से साभार )**

## वैदिक भारत-कौशल भारत
## आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब** के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

**-प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब**

# हम अपने जीवन की मलिनता हटाएं

-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र. भारत चलभाष ०९३५४७४५४२६

प्रभु की सहायता पाकर हम अपने अन्दर के काम, क्रोध आदि दुष्ट प्रवृतियों को दूर करें। सदा दिव्य व उत्तम कर्मों में लगे रह कर जीवन को शुद्ध करें तथा जीवन में जो-जो भी बुराईयां हों उन्हें दूर करने का सदा प्रयत्न करें। यजुर्वेद का यह मन्त्र इस पर ही प्रकाश डाल रहा है।

**युष्भाऽइन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्य्ये यूर्यामन्द्रमवृणीध्वं प्रोक्षिता स्थ।**

**अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्यग्नी-षोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि। दैव्याय कर्मणे**

**शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वोऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि।। यजु. 1.13।।**

इस मन्त्र में सात बातें बताई गई हैं:

१. हम अपने कामादि का नाश करें-इस मन्त्र में जिस प्रथम विषय पर चर्चा की गई है, वह है कामादि का नाश। मानव जीवन में काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार आदि अनेक शत्रु होते हैं। इन शत्रुओं के वश में रहने वाला जीव सदा ही विपतियों से घिरा रहता है। लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेष उसके जीवन का आवश्यक अंग बन जाते हैं। उसका जीवन नरक के समान बन जाता है। इसलिए इन सब को जीवन के शत्रु माना गया है। यह मन्त्र अपने उपदेश के आरम्भ में यह ही कह रहा है कि हम इन शत्रुओं का नाश करें, इन का संहार करें। इन शत्रुओं को हम अपने जीवन में न आने दें।

जब हम इन बुराईयों का नाश करने के लिए इन से लड रहे होते हैं तो इस लड़ाई को मन्त्र तूर्य का नाम देता है तथा जब हम इस का संहार करते हैं तो मन्त्र इसे वृत्रतूर्य का नाम देता है। मन्त्र कहता है कि हे जीव ! तू वृत्रतूर्य बन। अपने अन्दर के शत्रुओं के साथ युद्ध करते हुए इन सब का संहार कर दे। यह बुराईयों के संहार के रुप में तू एक प्रकार का यज्ञ कर रहा है। इस यज्ञ की अग्नि कभी बुझने न दे। इस में सफलता प्राप्त कर ही विश्राम करना। जब तक सफ़लता नहीं मिलती, इस युद्ध को, इस यज्ञ को करते ही रहना।

हे जीव ! प्रभु ने तुम्हें इस कामादि शत्रुओं को नष्ट करने के लिए चुना है क्योंकि तूंने विगत में उत्तम कर्म किये थे। जिन प्राणियों का विगत कर्मों का संग्रह उत्तम होता है, प्रभु उसे ही उत्तम कर्म करने का अधिकारी बनाता है। जिन के बैंक में कुछ जमा ही नहीं, वह क्या कुछ बैंक से निकालेगा अर्थात् कुछ भी नहीं। इस प्रकार ही जिस प्राणी ने अपने विगत जीवन को मौज मस्ती में बिताया था, कुछ उत्तम किया ही न था। ऐसे प्राणियों को प्रभु ने भोग योनी में भेज दिया। उनका काम मात्र भोग ही रह गया किन्तु जिन प्राणियों ने कुछ उत्तम कार्य किये, चाहे वह कर्म उनके मध्यम स्थिति में ही रहे, ऐसे प्राणियों को ही उस प्रभु ने मानव जीवन दिया। इस प्रकार के प्राणी को मानव जीवन तो दे दिया किन्तु वह सामान्य प्राणी ही बने रहते हैं। वह कामादि दोषों से प्रताड़ित ही रहते हैं।

जिन प्राणियों ने यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के मन्त्र संख्या बारह के अनुरुप कार्य करते हुए अपने जीव को उत्तम व पवित्र बनाया, ऐसे प्राणियों को प्रभु ने सात्विक श्रेणी, उत्तम श्रेणी दी। जिस प्रकार एक स्कूल की एक ही कक्षा को कई बागों में बांट कर अ, ब, स आदि विभाग किये जाते हैं। अ भाग में सब से उत्तम, ब में मध्यम तथा स में निकृष्ट प्रकार के बच्चों को रखा दिया जाता है। इस प्रकार ही जो प्राणी अपने जीवन को पवित्र बनाने में सफ़ल रहते हैं, ऐसे प्राणियों को प्रभु कामादि शत्रुओं से लड़ने तथा उनका संहार करने की शक्ति देता है। ऐसे व्यक्ति ही सात्विक कहलाते है तथा ऐसे प्राणियों की श्रेणी का नाम ही सात्विक श्रेणी होता है। इस प्रकार के प्राणी कामादि से तब तक निरन्तर लड़ते रहते हैं, जब तक कि वह इन दोषों का नाश करने में सफ़ल नहीं होते।

२. प्रभु की सहायता से ही हम सफ़ल होते हैं-हम कामादि शत्रुओं से लड़ने की शक्ति भी प्रभु से ही प्राप्त करते हैं। इसलिए उस परमैश्वर्यशाली प्रभु का वरण करना, उसका आशीर्वाद पाने का यत्न, उसकी निकटता पाने का प्रयास हम निरन्तर करते हैं और यह आवश्यक भी है, क्योंकि उसकी सहायता के बिना हम सफ़ल तो क्या होंगे? कुछ कर भी न करेंगे। हम जानते हैं कि केवल महादेव ही काम देव को भस्म कर सकते हैं, अन्य कोई नहीं। इसलिए हमें उस महादेव रुपि उस पिता से निकटता बनाकर, इस कार्य की सफ़लता का उससे आशीर्वाद प्राप्त करना है।

३. प्रभु कृपा से ही हम शुद्ध होते हैं-कामादि शत्रुओं से लड़ने के लिए हमारे अन्दर शुद्धता का, पवित्रता का होना आवश्यक है। जब हम स्वयं ही शुद्ध पवित्र नहीं हैं, जब हम स्वयं ही कलुषित कार्य कर रहे हैं तो हम कलुषित के साथ लड़ कर कैसे विजयी हो सकते हैं। इसलिए हमें पहले अपने जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाना होता है तकि हमारी शक्ति हमारे शत्रु से अधिक हो सके तथा फ़िर जब हम इन शत्रुओं से लड़ेंगे तो निश्चय ही सफ़ल भी होंगे। कहा गया है अपने उपर जल छिड़को, स्नान करो तो तुम शुद्ध हो जावोगे। जल शुद्धि का प्रतीक माना गया है। इस प्रकार ही प्रभु की समीपता को पाना, उस प्रभु का वरण करना, उसका आशीर्वाद प्राप्त करना भी शक्ति का प्रतीक है। जब तुम प्रभु का वरण करने में सफ़ल हो जाते हो तो तुम शक्तिशाली हो जाते हो, प्रत्येक अंग में शक्ति का संचार हो जाता है तथा इस युद्ध में तुम्हारी विजय निश्चित हो जाती है। इसलिए हम प्रभु की सहायता प्राप्त कर अपने जीवन को शुद्ध बनावें।

४. हम केवल यज्ञशेष का ही सेवन करें-मानव सदा पका हुआ भोजन ही करता है। कच्चा भोजन वह नहीं करता क्योंकि ऐसा भोजन इस के लिए सुपाच्य नहीं होता। कभी वह कच्चा भोजन कर भी लेता है तो उसको उल्टी, टट्टी या पेट दर्द आदि कई प्रकार की व्याधियां हो जाती हैं। यह क्यों होती हैं ?, क्योंकि उसने प्रभु के बनाए हुए नियम को तोड़ते हुए अपने शरीर को तानाशाह बनाने का यत्न किया। इस दु:साहस के लिए साथ ही प्रभु ने उसे दण्डित करते हुए उसके पेट में दर्द आदि कुछ व्याधि पैदा कर दी। यह व्याधि उसे केवल कष्ट देने मात्र के लिए पैदा नहीं की अपितु इसलिए भी की कि उसे पता चले कि उसने गलती की है तथा भविष्य में इस प्रकार की गलती को पुन: नहीं करना।

इसलिए प्रभु उपदेश करते हैं कि हे मानव ! यज्ञ की अग्नि को ही अपने में अवशिष्ट कर। अर्थात् यज्ञ करने के पश्चात् जो शेष बचता है, उसे ही तू उपभोग कर। संसार की वस्तुओं पर आश्रित न रह कर यज्ञशेष पर ही आश्रित रह। इस सब का भाव यह है कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसे हम यज्ञ पर, परोपकार के कार्यों पर व्यय करें और इस प्रकार से दूसरों की सहायता करने के पश्चात् ही शेष बचे पदार्थ को अपने हित के लिए प्रयोग करें। हम जानते हैं कि हमारी यह प्राचीन काल से ही परम्परा रही है कि हम भोजन बनाते समय या भोजन करते समय पहले गाय, फ़िर पशु, पक्षी आदि का भाग रखकर फिर ही भोजन को अपने पेट की भेंट करते हैं। इस का भाव यह ही है कि हम पहले यज्ञ करते हैं तथा फ़िर यज्ञशेष को अपने लिए ग्रहण करते हैं।

इस प्रकार जो पदार्थ अग्नि व सोम द्वारा सेवित होता है, संस्कारित होता है, उसका ही मैं अपने लिए प्रयोग करता हूं अर्थात् इस प्रकार से संस्कारित भोजन को ही हम ग्रहण करें क्योंकि ऐसा भोजन शन्ति देने वाला होता है, ऐसा भोजन शुद्धि देने वाला होता है, ऐसा भोजन पवित्रता व निरोगता देने वाला होता है, ऐसा भोजन शक्ति व स्वास्थ्य देने वाला होता है। इस प्रकार हमारा भोजन भी यज्ञ का रूप बन जाता है। इस

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय......

# नशामुक्त समाज से ही राष्ट्र का उत्थान सम्भव

राष्ट्र निर्माण का प्रथम साधन है- चरित्र बल। जिस प्रकार शरीर को संभालने के लिए रीढ़ की हड्डी आवश्यक है उसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर को संभालने के लिए चरित्र बल रूपी मेरू दण्ड आवश्यक है। बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के इस कथन से प्रेरणा लेनी चाहिए कि-समाज में प्रचलित विधि विधानों के उल्लंघन का दु:ख चरित्र बल और विवेक बुद्धि के बल पर ही दूर किया जा सकता है। आकर्षक प्रलोभन के आगे मन फिसल जाता है, परन्तु चरित्रवान उन्हें ठुकरा देता है। वासनाओं के तूफान के आगे दुर्बल मन उड़ जाता है, परन्तु चरित्रवान इन तूफानों के बीच में भी अड़िग रहता है। उमड़ती हुई शक्ति के सागर को देखकर दुर्बल मन झुक जाता है, किन्तु चरित्रवान साहस के साथ अन्याय का मुकाबला करता है। युवक में व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता पैदा करनी पड़ेगी और इस चरित्रबल को राष्ट्र कल्याण की दिशा में मोड़ना पड़ेगा। यदि हम लोग इस प्रकार का चरित्र युवकों में पैदा कर सके तो देश की सर्वोत्तम सेवा होगी।

आज समाज में नशे के फैलने से युवा वर्ग इसमें बुरी तरह फंस चुका है। नशे की दलदल में फंसकर युवा शक्ति अपने भविष्य को बर्बाद कर रही है। जिस युवा शक्ति को राष्ट्र के भविष्य निर्माण में अपना योगदान होना चाहिए वही युवा वर्ग आज लक्ष्य से हीन होकर अपने भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। नशे की चपेट में आकर हमारा देश निराशा के गर्त में डूबता जा रहा है। आज के स्वार्थी नेता अपने स्वार्थ के लिए युवा शक्ति का दोहन करके उन्हें नशे की दलदल में ढकेल देते हैं। नशे के विरूद्ध लड़ने के लिए आज बहुत बड़े आन्दोलन की आवश्यकता है। इसके लिए युवा शक्ति को जगाना होगा। उन्हें उनके कर्त्तव्य का बोध कराना होगा। नशे को जड़ से खत्म करने के लिए हमें सरकार से भी सहयोग लेना चाहिए। जो पार्टी नशा उन्मूलन में सहायता देगी उसी को हम अपना जन समर्थन दें ताकि राष्ट्र के भविष्य को बचाया जा सके। आज का युवा वर्ग आने वाले राष्ट्र का भविष्य है। अगर हम इस युवा पीढ़ी को चरित्रवान बना दें और नशे से मुक्त कर दें तो राष्ट्र का भविष्य संवर सकता है।

राष्ट्र का निर्माण नवयुवकों की भीड़ से नहीं हुआ करता है। राष्ट्र के निर्माण के लिए ऐसे लोगों की जरूरत पड़ती है जिनके जीवन में यौवन शक्ति का प्रवाह हो परन्तु साथ ही विवेक की मशाल भी जलती रहे। यदि जीवन में विवेक की मशाल नहीं जलती है तो तरूणाई राष्ट्र के लिए संकट बनकर खड़ी हो जाती है। इस यौवन के वरदान के प्रसंग में उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का यह वचन सदा प्रेरणा देता रहेगा जवानी जोश है, बल है, साहस है, दया है, आत्मविश्वास है, गौरव है वह सब कुछ हैं जो जीवन को पवित्र, उज्जवल और पवित्र बना देता है। आज राष्ट्र का गौरव बढ़े, इसके लिए हमें युवकों को चरित्रवान बनाना होगा। आज राष्ट्र के अन्दर जिस प्रकार युवा पीढ़ी नशे की दलदल में धंस रही है, वह सबके लिए चिन्ता का विषय है। पंजाब तो नशे के कारण बहुत बदनाम हो रहा है। इस नशे के कारण पंजाब का भविष्य बर्बाद हो रहा है। युवा पीढ़ी जिसके ऊपर राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है अगर वही युवा पीढ़ी नशे की दलदल में धंस जाए तो उस राष्ट्र की क्या दशा होगी, उसका अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं। आज के युवा वर्ग को कैसे नशे से मुक्त किया जाए? इस पर सबको विचार करना है। क्या सरकार द्वारा खोले गए नशा मुक्ति केन्द्रों से नशा छूट जाएगा? क्या बलपूर्वक युवकों से नशा छुड़ाया जा सकता है? इन सभी विषयों पर विचार विमर्श करने की आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी के लिए हमें ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जिससे उन्हें राष्ट्र के प्रति, परिवार के प्रति अपने भविष्य के प्रति जागरूक किया जा सके। नशा मुक्ति केन्द्रों के द्वारा तब तक युवा पीढ़ी को नशे से मुक्त नहीं किया जा सकता जब तक उनके अन्दर स्वयं छोड़ने की भावना न हो। राजनीतिक पार्टियां नशे जैसे गम्भीर मुद्दे पर चिन्तन करने के बजाय राजनीति करने लगती है और एक दूसरे के ऊपर दोषारोपण लगाती हैं। इस गम्भीर मुद्दे पर राजनीति करने के बजाय सभी राजनीतिक पार्टियां एकजुट होकर कोई समाधान निकाले तो अवश्य सुधार हो सकता है। इस गम्भीर मुद्दे पर व्यक्तिगत स्वार्थ को त्यागकर राष्ट्रहित को सामने रखना चाहिए। नशे जैसी गम्भीर समस्या पर सारा समाज, सभी राजनीतिक दल, समाजसेवी संस्थाएं एकजुट होकर कार्य करें तो इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है। नशा नाश का दूसरा नाम है। नशे में व्यक्ति की सोचने विचारने की शक्ति नष्ट हो जाती है। उसे नैतिक, अनैतिक में कोई भेद नजर नहीं आता। नशे में वह कोई भी कुकृत्य करने से घबराता नहीं है। मानवता का नाश करने वाले इस नशे को जड़ से खत्म करने के लिए सभी को एकजुट होना होगा। अगर प्रत्येक व्यक्ति अपना, अपने परिवार का सुधार कर लें तो राष्ट्र का अपने आप सुधार हो जाएगा। आज की युवा पीढ़ी के भटकने का कारण यही है कि उन्हें अच्छे संस्कार नहीं मिल रहे हैं। घर में, स्कूलों में, कॉलेजों में जहां पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है, उसके नव जीवन का निर्माण होता है वहां पर उन्हें उस प्रकार की शिक्षा नहीं मिल पा रही है जिससे वे चरित्रवान् बन सकें। नशा व्यक्ति की विवेकशीलता को खत्म कर देता है। विवेक के समाप्त होने पर मनुष्य और पशु में कोई फर्क नहीं रह जाता है।

आज राष्ट्र का गौरव बढ़े, इसके लिए हमें युवकों को नशामुक्त और चरित्रवान बनाना होगा। युवकों के चरित्र को गौरवमय बनाने के लिए उनके चरित्र में भारतीय संस्कृति का दिव्य प्रकाश होना चाहिए। आज इन दिग् भ्रमित युवकों को दिशा निर्देशन की जरूरत है। इस दिशा निर्देशन के पीछे राष्ट्र भक्ति, विवेक शीलता, अपनी संस्कृति के प्रति गौरव की भावना का उद्देश्य निहित होना चाहिए। तब तक नशामुक्ति केन्द्रों से नशे को समाप्त नहीं किया जा सकता जब तक उनके अन्दर विवेक की, राष्ट्रभक्ति की भावना स्वयं पैदा न हो। इसलिए राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि इस गम्भीर समस्या पर विचार करके इस का समधान अवश्य निकालें ताकि राष्ट्र के भविष्य को बर्बाद होने से बचाया जा सके और युवा वर्ग की ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों मे लगाया जा सके।

आज के युवा वर्ग को नशे तथा अन्य बुराईयों से दूर करने के लिए चरित्र निर्माण शिविरों की आवश्यकता है। युवा वर्ग को अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ जोड़ कर रखने से ही उन्हें बुराईयों से बचाया जा सकता है। वही समाज एवं राष्ट्र उन्नति कर सकता है जिस समाज का युवा वर्ग नशा तथा अन्य बुराईयों से दूर हो। जिस युवा वर्ग के अन्दर अपनी मातृभूमि, मातृभाषा, संस्कृति व सभ्यता के प्रति गर्व की अनुभूति हो वही राष्ट्र को नई दिशा दे सकते हैं। इसलिए हम सबका यही प्रयास होना चाहिए कि युवाशक्ति को अपने नैतिक मूल्यों से जोड़ कर रखें।

**-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री**

# वैदिक वाङ्मय में देवता

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

अगस्त 2014 में वैदिक संसार में आचार्य रामगोपाल सैनी का एक लेख देवताओं और त्यौहारों का विरोध गलत' प्रकाशित हुआ। आपको कुछ लोगों से शिकायत है कि वे पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखकर इस तरह के भ्रम फैला रहे हैं-1. देवता लोग दुराचारी थे। 2. देवता लोग सुरा पीते थे। 3. हमें देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त लेख में चार विषय और है' 1. आर्य लोग भारत में बाहर से आए हैं 2. देश के निवासी आर्य और अनार्य भागों में विभाजित है, अनार्य लोग ही देश के मूल निवासी है, 3. होली, दशहरा, रक्षा बन्धन आर्यो के त्यौहार है, हम अनार्यों को इन्हें नहीं मनाना चाहिए। 4. इन्द्र विष्णु आदि देवता आर्यो के हैं और अनार्यों के ये शत्रु है। अनार्यो के पूर्वज हिरण्यक शिपु बालि आदि थे।

मैं आज अपने लेख में वैदिक वाङ्मय में देवताओं के विषय में क्या कुछ धारणा है वह पाठकों के सामने रख रहा हूँ। शेष प्रश्नों के उत्तर भी आगे दूसरे लेखों द्वारा देने का प्रयास करूंगा।

पहले हम यह जाने कि देवता किसे कहते हैं ? निरूक्त 7.15 में देवता की परिभाषा करते हुए कहा गया है, देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भववीति या। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस विषय को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के चतुर्थ अध्याय में उठाया है। वे लिखते हैं-(देवो दानाद्वा) दान देने से देव नाम पड़ता है और दान कहते है अपनी चीज दूसरे को दे देना। (दीपना द्वा) दीपन कहते हैं प्रकाश करने को (द्योतना द्वा) द्योतन कहते हैं सत्योपदेश को (द्युस्थानो) प्रकाश का केन्द्र या प्रकाश का घर। इनमें से दान का दाता मुख्य रूप से एक ईश्वर ही है कि जिसने सृष्टि की रचना कर जगत् को सब उपकारी पदार्थ तेज, अग्नि, जल, अन्न, ओषधियां आदि निःशुल्क दे रखी हैं। साथ ही माता-पिता, विद्वान जन भी अन्न और विद्यादि पदार्थों के देने वाले होने से देव कहलाते हैं। फिर सब मूर्तिमान द्रव्यों का प्रकाश करने से, धूपादि देने से वर्षा में सहायक होने से सूर्य, चन्द्रादि का नाम भी देव है। सत्योपदेश देने से माता-पिता, आचार्य और अतिथि भी देव कहाते है। वैसे ही सूर्यादि लोकों का भी प्रकाश करने वाला ईश्वर है। वह महादेव है, वही मनुष्यों का उपासना करने योग्य इष्ट देव है अन्य कोई नहीं। सूर्य, चन्द्र, तारे, बिजली, अग्नि ये सब परमेश्वर में प्रकाश नहीं कर सकते किन्तु इन सबका प्रकाश करने वाला एक वही है क्योंकि परमेश्वर के प्रकाश से ही सूर्य आदि जब जगत् का प्रकाश हो रहा है। ईश्वर से भिन्न कोई पदार्थ प्रकाश करने वाला नहीं है। इससे परमेश्वर ही मुख्य देव है। कठोपनिषद में भी यही कहा है कि वह ईश्वर प्रकाशकों का भी प्रकाशक है-

**न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतो ऽयमग्निः।**

**तमेव भान्तमनुभाति सर्व तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।। 5.15**

पदार्थ-(तत्र) उस (ब्रह्म) में (सूर्यः) सूर्य (न भाति) नहीं प्रकाशित होता (न चन्द्रतारकं) न चन्द्रमा और तारे (इमाः) और ये (विद्युतः) बिजली भी (न भान्ति) वहाँ नहीं चमकती फिर (अयम्) यह (अग्निः) अग्नि वहाँ (कुतः) कहाँ से प्रकाशित हो सकती है। किन्तु (तम्) उस (एव) ही के (भान्तम्) प्रकाशित होने से (सर्वम्) से सब (सूर्यादि) (अनुभाति) पीछे से प्रकाशित होते हैं (तस्य) उसके (भासा) प्रकास से (इदम्) यह (सर्वम्) सब (विभाति) प्रकाशित होता है।

यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र संख्या 4 में तो इन्द्रियों को देवता कहा गया है।

**अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनदेवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।** वह ब्रह्म (अनेजत्) अचल एक रस (एकम्) एक (मनसो जवीयः) मन से भी अधिक वेग वाला है क्योंकि सब जगह (पूर्वम्) पहले से (अर्षत्) पहुँचा हुआ है। (एतम्) उस ब्रह्म को (देवाः) इन्द्रियां (न आप्नुवन्) नहीं प्राप्त होती अर्थात् इन्द्रियों से वह उनका विषय नहीं होने के कारण प्राप्त नहीं होता।

फिर निरूक्त का कथन है-**माहाभाग्यदा् देवताया एव आत्मा बहुधा स्तूयते।** निः 7.4. अर्थात् व्यवहार के देवताओं की उपासना कभी नहीं करनी चाहिए किन्तु एक परमेश्वर की ही उपासना करना उचित है।

अब हम देखते हैं कि देवता यथार्थ में कितने है-

**ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन। विदन्नहं द्वितासनन।।**

**त्रयस्ति ँ शतस्तुवत भूतान्य-शाम्यच्यप्रजापतिः परमेष्ठ्यधि पतिरासीत्। यजु. 1.4.3**

अर्थात् व्यवहार के ये तेंतीस देवता हैं आठ वसु, ग्यारह, रूद्र, बारह आदित्य, एक इन्द्र और एक प्रजापति। इनमें आठ वस्तु ये है-अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा और नक्षत्र।

ग्यारह रूद्र में है-प्राण अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और ग्यारवाँ जीवात्मा। ये रुद्र इसलिए कहलाते हैं क्योंकि जब ये इस शरीर से निकल जाते हैं तब मृत्यु हो जाती है, तब मरण हो जाने से सम्बन्धी लोग रोने लग जाते हैं। ये निकलते हुए उन्हें रूलाते हैं इससे इनका नाम रूद्र है।

**बारह आदित्य**-बारह महीनों को कहते हैं क्योंकि ये सब जगत् के पदार्थों का आदान अर्थात् सब की आयु को ग्रहण करते चले जाते हैं, इसी से इनका नाम आदित्य है।

इन्द्र नाम विद्युत का है क्योंकि वह उत्तम ऐश्वर्य की विद्या का मुख्य हेतु है।

प्रजापति यज्ञ को कहते हैं। क्योंकि यज्ञ के द्वारा वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा प्रजा का पालन होता है। इसके अतिरिक्त स्थान नाम और जन्म को भी देवता कहते हैं। दो देव अन्न और प्राण को कहते है। इनसे सब का धारण और वृद्धि होती है। जो सूत्रात्मा वायु सब जगत् में भर रहा है उसको अध्यर्ध देव कहते हैं। पशुओं को भी यज्ञ देव कहते है क्योंकि उनसे भी प्रजा का जीवन होता है। परन्तु इनमें से कोई भी देव उपसनीय नहीं है।

इन देवताओं में भी दो प्रकार का भेद है। एक मूर्तिमान् और दूसरा अमूर्तिमान्। मूर्तिमान देव है-माता-पिता, आचार्य और अतिथि और पांचवां पर ब्रह्म। अमूर्तिमान देव है-सूर्य, चन्द्र आदि। इसी प्रकार वस्तुओं में भी अग्नि, पृथ्वी, आदित्य और चन्द्रमा नक्षत्र मूर्तिमान देव है। शेष अमूर्तिमान देव है। बृहदारण्यक उपनिषद अध्याय एक ब्राह्मण तीसरा की कण्डिका से कण्डिका 28 तक इन्द्रिया को देवता मान कर वर्णन हुआ है। इसी प्रकार केनोपनिषद् तृतीय खण्ड में वायु, अग्नि और इन्द्र को देवता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

बृहदारण्यक उपनिषद तीसरा अध्याय ब्राह्मण पहला कण्डिका नौ में याज्ञवलक्य मन को देवता बताते हैं जो यज्ञ की रक्षा करता है। फिर बृहदारण्यक अध्याय 3 ब्राह्मण 9. कण्डिक 3. याज्ञवल्क्य से विदग्ध, ने पूछा था कि देवता कितने हैं ? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया था तीन सौ तीन, और तीन हजार तीन, विदग्ध ने कहा कि ठीक है। फिर पूछा तो कहा 33 फिर आगे पूछने पर 6 तथा 3 देव बताए।

फिर पूछने पर दो देव बताए और फिर डेढ़ और अन्त में एक देव बताया। इस प्रकार देवताओं की संख्या क्रमशः 3306,33,6,2, 11/2 तथा। बताई गई। विदग्ध ने सभी संख्याओं को स्वीकार किया। दूसरी कण्डिका में याज्ञवल्क्य ने 33 देवता बताए थे। 3306 तो उनकी विभूति का विस्तार है। फिर 6 देवता बताए। वास्तव में आठ वसुओं में से चन्द्रमा और नक्षत्र को निकाल देने पर छः देव अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष आदित्य और द्यौ बचते हैं। इन्हीं को छः देवता कहा। आगे पूछने पर अन्न और प्राण दो देवता बताए। इस प्रकार प्रकृति और उर्जा दो देव रहे। फिर केवल वायु को देवता कहा। वायु को अध्यर्द्ध कहते हैं जिसका अर्थ डेढ होता है अन्त में एक देव प्राण अर्थात् ब्रह्म को माना। ईश्वर को छोड़कर समस्त ज्ञेय जगत् को 33 देवता ही कहा जाता है।

मैं समझता हूँ कि इन 33 देवताओं की कोई भी निन्दा नहीं कर सकता है। इन पर दुराचार का आरोप भी नहीं लगाया जा सकता है। इनकी पूजा या उपासना भी नहीं की जाती है।

संभवतः कुछ लोग ब्रह्मा, विष्णु

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# हमारा धन पवित्र हो !

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

आज हमारे समाज में धन का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है क्योंकि आज मान-सम्मान की कसौटी भी केवल और केवल मात्र धन ही रह गया है। यदि आपके पास धन है तो आप जो चाहें कर सकते हैं। भले ही बड़े से बड़ा पाप कर लें मगर धन का प्रयोग करके आप कानून की नजरों से भी बच सकते हैं। धन है तो आप बड़े से बड़े पद को हासिल कर सकते हैं। यहां तक कि किसी की हत्या करके भी आप बच सकते हैं। हमारे मनीषियों ने धन के इस महत्व को कम करने के लिए आश्रम और वर्ण-व्यवस्था का विधान किया था। इस व्यवस्था के अन्दर धन को इतना अधिक महत्व नहीं दिया जाता था। चार आश्रमों में से ब्रह्मचर्य आश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यास आश्रम के व्यक्ति धन नहीं कमाते थे। केवल गृहस्थ को ही धन कमाने का अधिकार था, शेष सभी आश्रमों की व्यवस्था का दायित्व गृहस्थ पर ही होता था मगर सभी गृहस्थी भी धन नहीं कमाते थे। चार वर्णों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र को धन कमाने की चिन्ता नहीं होती थी क्योंकि यह कार्य केवल वैश्य का हुआ करता था। वैश्य द्वारा धन कमाने की भी कुछ मर्यादाएं थीं। भले ही धन कमाना गृहस्थ का दायित्व था मगर सम्मान ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी का अधिक होता था। उसी प्रकार वैश्य से अधिक प्रतिष्ठा और सम्मान ब्राह्मण का होता था। कालान्तर में यह व्यवस्थाएं समाप्त हो गई तथा प्रत्येक व्यक्ति ही धन कमाने के लिए दीवाना हो गया। इसलिए धन का महत्व बढ़ गया। आज ब्राह्मण की नहीं बल्कि धनवान की पूजा होती है। आज संन्यासी की नहीं बल्कि धनवान् की पूजा होती है।

धन का महत्व इतना अधिक बढ़ गया है कि आज लोग रातों-रात अमीर बनाना चाहते हैं... साधन चाहे कैसा भी क्यों न हो मगर उन्हें तो बस धन कमाना है। धन कमाने के लिए दूध वाला दूध में पानी मिलाने में पीछे नहीं है, व्यापारी अनाज आदि में मिलावट करने में पीछे नहीं है। बाबू घूस लेने में पीछे नहीं है। पुलिस, डाक्टर, वकील, न्यायधीश, नेता, अभिनेता सभी बड़े-बड़े घोटालों में संलिप्त हैं। लोग घोटाले करते हैं और फिर धन के बल पर उनसे बरी भी हो जाते हैं। लोग चार पैसे कमाने के लिए नकली दवाईयों तक का धन्धा करते हैं। उनकी दवाईयों से कितने लोगों की मृत्यु हो जाती है, इसकी उन्हें चिन्ता नहीं है-उन्हें तो बस धन कमाना है.... धन प्राप्ति की इस दौड़ में आज सभी निमग्न हैं। यहां तक कि आज बहुत से तथाकथित सन्त भी रात-दिन चेले-चेलियां बनाकर धन कमाने में ही लगे हुए हैं। इसीलिए समूची समामाजिक व्यवस्था चरमरा गई है। आज लड़के-लड़की का रिश्ता भी उनके गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर नहीं होता है बल्कि वहां पर भी सौदा किया जाता है कि कितना धन दोगे.... फिर भी तृप्ति नहीं है क्योंकि बाद में कितनी ही नारियों को जिन्दा जला दिया जाता है.... धन की इस दौड़ ने सबको पागल बना रखा है... हमारे देश की यह परम्परा नहीं थी तथा पैसे की यह दौड़ भी इतनी अधिक नहीं थी। चीनी यात्री मैगस्थनीज भारत की यात्रा पर आया तो उसने लिखा कि चन्द्रगुप्त के समय में लोग अपने घरों में ताले नहीं लगाते थे। किसी ने बहुत सुन्दर कहा है-

**अन्यदीये तृणे रत्ने कांचने मैक्तिकेऽपि वा।**

**मनसा विनिवृत्तिर्या तदस्तेयं विदुर्बुधाः।।**

पराए तृण, रत्न, स्वर्ण और मोती आदि को ग्रहण करने की मन से भी जो वृत्ति होती है वह भी अस्तेय है, ऐसा ज्ञानी लोग कहते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि मन से भी किसी पराई वस्तु को चुराने का विचार तक भी नहीं करना चाहिए क्योंकि उस कुवृत्ति का संस्कार व्यक्ति के सूक्ष्म शरीर पर पड़ जाता है। यह संस्कार ही व्यक्ति को बार-बार चोरी आदि करने की प्रेरणा देते हैं। पण्डित तो वह है जो दूसरे के धन को भी मिट्टी के समान समझता है-

**मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्।**

**आत्मवत् सर्वभूतेषु,यः पश्यति स पण्डितः।।**

जो मनुष्य पराई स्त्रियों में अपनी माता के समान, पराए धन को मिट्टी के ढेले के समान और सब प्राणियों में अपने समान भावना रखता है वही वास्तव में पण्ड़ित है। मनु महाराज ने धन की पवित्रता को प्रमुख कहा है-

**सर्वेषामेव शौचनामर्थशौचं परं स्मृतम्। योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः।। ( मनु05-106 )**

**नेहेतसथान् प्रसगेन न विरूद्धेन कर्मणा। न विद्यमाने-ष्वर्थेषु नात्यामहि यतस्ततः।। ( मनु04-15 )**

**अध्यार्मिको नरो यो हि यस्य चाप्यनृतं धनम्। हिंसारतश्च यो नित्यं नेहासौ सुखमेधते।। ( मनु04-170 )**

**नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव। शनैरावर्त्तमानस्तु कर्तुर्कूलानि कृन्तति।।**

**यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत् पुत्रेषु नप्तृषु। न त्वेवन्तु कृतोऽधर्मः कर्त्तुर्भवति निष्फलः।।**

**सत्यधर्मायेवृत्तेषु शौचे चैवारमेत् सदा। शिष्यांश्च शिष्याद् धर्मेण वागबाहू-दरसयतः।। ( मनु04-172, 173, 175 )**

सभी प्रकार की शुद्धियों में धन सम्बन्धी शुद्धि सबसे मुख्य है। जो मनुष्य धन के विषय में शुद्ध है, वास्तव में वही शुद्ध है-मिट्टी और जल से शुद्ध हुआ यथार्थ में शुद्ध नहीं है। व्यक्ति को चाहिए कि वह कभी किसी दुष्ट के प्रसंग अर्थात् गलत ढंग से धन का संचय न करे, न विरूद्ध कर्म से। न विद्यमान पदार्थ होते हुए उनको गुप्त रख के, दूसरे से छल करके और चाहे कितना ही दुःख पड़े तदपि अधर्म से द्रव्य संचय कभी न करे। जो अधार्मिक मनुष्य है, और जिसका अधर्म से संचित किया हुआ धन है, और जो सदा हिंसा में अर्थात् वैर में प्रवृत्त रहता है, वह इस लोक और परलोक अर्थात् परजन्म में सुख को कभी नहीं प्राप्त हो सकता। मनुष्य निश्चित् करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता, वैसे ही किए हुए अधर्म का फल शीघ्र नहीं होता। किन्तु धीरे-धीरे अधर्म कर्त्ता के सुखों को रोकता हुआ सुख के मूलों को काट देता है। पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है। यदि अधर्म का फल कर्त्ता की विद्यमानता में न हो तो पुत्रों, और पुत्रों के समय में न हो तो नातियों के समय में अवश्य प्राप्त होता है। किन्तु यह कभी नहीं हो सकता कि कर्त्ता का किया हुआ कर्म निष्फल होवे। इसलिए मनुष्यों को योग्य है कि सत्य धर्म और आर्य अर्थात् उत्तम पुरूषों के आचरणों, और भीतर बाहर की पवित्रता में सदा रमण करें। अपनी वाणी बाहू उदर को नियम और सत्यधर्म के साथ वर्त्तमान रखके शिष्यों को सदा शिक्षा किया करें। इसलिए आदेश दिया गया है-

**परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातॉ धर्मवर्जितौ।**

**धर्म चाप्यसुखोदर्क लोकवि-कुष्टमेव च।।** ( मनु04-176 )

यदि बहुत सा धन, राज्य और अपनी कामना अधर्म से सिद्ध होती हो तो भी अधर्म सर्वथा छोड़ देवें और वेद-विरूद्ध धर्माभास जिसके करने से उत्तर काल में दुःख और संसार की उन्नति का नाश हो वैसा नाममात्र धर्म और कर्म कभी न किया करें।

जिस समाज में पाप की कमाई से अपना घर भरने की वृत्ति बन जाती है वहां आपसी प्रेम एवं सौहार्द और आत्मिक शान्ति समाप्त हो जाती है। सबसे बड़ी हानि होती है कि सन्तान पर कुसंस्कार पड़ने से परिवार बिगड़ते हैं और उनके बिगड़ने से सामाजिक समरसता ही समाप्त हो जाती है। अर्थ-प्रधान चिन्तन व्यक्ति को ह्दयहीन बना देता है। जो लोग अधर्म से धन कमाकर सुख-शान्ति प्राप्त करने की सोचते हैं उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा होना संभव नहीं है। धन की अपनी सीमाएं हैं-स्मरण रहे कि धन से उत्तम स्वास्थ्य नहीं मिल सकता है, धन से विद्या नहीं मिल सकती है, धन से सन्तोष नहीं मिल सकता है, धन से माता, पिता, भाई, पुत्र और पति-पत्नी नहीं मिल सकते हैं, धन से मित्रता नहीं मिल सकती है, धन से सुसंस्कार नहीं मिल सकते हैं, धन से सुख-शान्ति नहीं मिल सकती है, धन से मानसिक सबलता नहीं मिल सकती है और धन से आत्मिक आनन्द नहीं मिलता सकता है... धन की पवित्रता के सम्बन्ध में वेद में प्रार्थना की गई है-**ओ म् एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर।।** (ऋ०1-8-1) हे प्रभो ! हमारे रक्षण के लिए ऐसा धनैश्वर्य दीजिए जो-1. **सानसिम्**-सबके साथ बांटकर खाया जाए। हमारा धन केवल हमारे ही काम न आए बल्कि हम सबको बांटकर खाने वाले हों। व्यक्ति की इसी भावना को यज्ञ-भावना कहा गया है-**अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।** जहां यह भावना समाप्त होगी वहीं पर समरसता समाप्त हो जाएगी, आपसी व्यवहार

( शेष पृष्ठ 6 पर )

# त्याग का महत्व

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

त्याग मनुष्य के जीवन में सुख का मूल है। अतृप्त इच्छायें कामनायें दंश बनकर दुःख देती हैं और सुरसा के मुख की भांति बढ़ती कामनायें और अधिक पाने की इच्छा भौतिक सुखों के संग्रह की आदत अंत में जीवन में दुःखों का कारण बनती हैं। मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धन संतोष धन है जिसे पा लेने के बाद व्यक्ति तृप्त हो जाता है। इसीलिए वेद भगवान ने **तेन त्यक्तेन भुंजीथा** का आदेश देकर मनुष्यों को त्यागपूर्वक भोग करने का निर्देश दिया है। ईश्वर के उपकारों की बरसात हम सब मनुष्यों पर बड़ी सरलता और सहजता से हो रही है। यह हम मनुष्यों की पात्रता पर निर्भर करता है कि इसमें कितना एकत्रित हो पाता है लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम पुरुषार्थ से अर्जित तथा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान धन आदि में से कितना दे पाते हैं।

मनुष्य के जीवन की असली खुशी इस बात पर निर्भर करती है कि हम क्या दे सकते हैं। त्याग की ख़ुशी का सच्चा आनंद हम जीवन में रक्तदान करते समय बड़ी आसानी से महसूस कर सकते हैं। स्वस्थ मनुष्य जब किसी घायल मरणासन्न रोगी को रक्त देकर जीवन दान देते हैं तो उस समय इस त्याग देने की खुशी चरम पर होती है। इसके महत्व को हम अपने लिए जीवन रक्षा के समय रक्त की आवश्यकता पड़ने पर महसूस कर सकते हैं। एक लौकिक उदाहरण से त्याग के महत्व को हम और अच्छी प्रकार से समझ सकते है। एक सेठ जी कथा सुनने आते और चुपचाप पीछे बैठ कर बड़े ध्यान से कथा सुनते। एक दिन जब वक्ता ने दान का महत्व समझाया तो उसके प्रभाव से सेठ जी ने एक बड़ी धनराशि दान में देने की घोषणा कर दी। यह सुनकर संस्था के प्रधान ने तुरंत सेठ जी को मंच पर बैठा कर उनका स्वागत किया। इस पर सेठ जी ने टिप्पणी की ''यह सम्मान शायद मेरे धन का है'' तो तुरंत विद्वान ने सेठ जी को समझाया ''सेठ जी यह सम्मान आपकी त्याग भावना का है। यह धन तो पहले भी आपकी तिजोरी में पड़ा था लेकिन आपको सम्मान नहीं दिलवा पाया परन्तु जैसे ही आपने इसका त्याग दान भावना से किया इस त्याग भावना ने आपको समाज में सम्मान दिलवा दिया।''

वैसे भी यह एक निश्चित सत्य है कि त्याग से देने वाले के पास वह वस्तु घटती नहीं अपितु बढ़ जाती है। इसे समझने के लिए हम विद्या दान का उदाहरण ले सकते हैं। ज्ञान बांटने से बढ़ता है। ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में त्याग के पुण्य के लाभ से मिलने वाली अच्छी नियति निश्चित रूप से त्यागी के जीवन को सुखी करती है। खुशी का सबसे बड़ा रहस्य त्याग है। संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। त्याग के बिना ईश्वरीय प्रेरणा और प्रार्थना नहीं मिल पाती। मनुष्य का जीवन देने के लिये हैं लेने के लिये नहीं। ऊँचाई पर पहुंचकर दूसरों की भलाई के लिए बादल बन कर बरसने में ही सच्चा सुख है वरना बड़ा हुआ तो क्या जैसे पेड़ खजूर, पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर। नदी अपना नीर स्वयं नहीं पीती, वृक्ष अपना फल खुद नहीं खाते ठीक उसी प्रकार इनसे प्रेरणा लेकर हम मनुष्यों को भी अपने जीवन में पुरुषार्थ से अर्जित तथा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान धन ऐश्वर्य को त्यागपूर्वक बांट कर सच्चे सुख को प्राप्त करना चाहिए। वैसे भी वेद भगवान ने **केवलाघो भवति केवलादि** कहकर स्पष्ट रूप से चेतावनी दी है कि अकेला खाने वाला पाप खाता है। इसलिए हमें जीवन में सदा बांटकर सबके साथ मिलकर त्यागपूर्वक भोग करते हुए सुख पूर्वक रहना चाहिए।

पृष्ठ 5 का शेष-हमारा धन पवित्र हो !

समाप्त हो जाएगा और विखराव आरंभ हो जाएगा। इसलिए वेद कह रहा है कि बांटकर खाओ। 2. **सजित्वान**-धन प्राप्त करके उस धन के विजेता बने रहो। अक्सर देखा यह जाता है कि धन आने पर व्यक्ति अनेक प्रकार के व्यसनों का शिकार हो जाता है या धन के अंहकार में आकर असंवैधानिक कार्य करने लग जाता है, जिसका परिणाम दुःख ही होता है। उस धन से अपनी सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति करें..... यश प्राप्त करें..., 3. **सदासहम**-जिस धन से हम सहनशील और स्वावलम्बी बने रहें और 4. **वर्षिष्ठम्**-वह धन जो अतिशयेन संवृद्ध हो, हमें बढ़ाने वाला हो, हमारे जीवन में सुखों की वर्षा करने वाला हो। यह तभी हो सकेगा यदि पवित्र साधनों से धन कमाया गया हो अन्यथा मनुजी के अनुसार अधर्म से कमाया गया धन तो कभी न कभी मूलसहित नष्ट हो ही जाएगा.....

## बारह स्कूल बाईस प्रतियोगिताएं 87 विजेता

वैदिक शिक्षा परिशद् फाजिलका ने ''वैदिक संस्कृति संरक्षण अभियान-2017'' के अन्तर्गत विभिन्न स्कूलों में वैदिक संस्कृति से परिचय करवाने हेतु अत्यन्त सघन एवं व्यस्ततम कार्यक्रम का आयोजन किया। अभियान के संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री के अनुसार इसमें बारह स्कूल सम्मिलित हुई। जिनमें 12 दिवसीय 22 प्रतियोगिताएं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुईं। सर्वजन हितार्थ विस्तृत कार्यक्रम पर दृष्टिपात करना अनुचित न होगा।

1. सरकारी मॉडल सी. से. स्कूल कौड़ियांवाली। पर्यावरणीय महायज्ञ के पश्चात् (क) पर्यावरणीय निबन्ध प्रतियोगिता विषय-वृक्ष लगाओ, वृक्ष बचाओ। (ख) पर्यावरणीय सुलेख प्रतियोगिता। (ग) पर्यावरणीय भाषण प्रतियोगिता। विषय-1. रहिमन पानी राखिए, पानी बिन सब सून।

2. ध्वनि प्रदूषण का दबाव, घटती श्रवण शक्ति बढ़ता तनाव।

3. वायु प्रदूषण का ग़म-रुकती सांसें घुटता दम।

4. किसान कहे मिट्टी से-''उपज घटी, और बिगड़ गई क्यों तेरी काया।''

बुझे मन से वह बोली-''भैया, मानव ने ही तो दूषित मुझे बनाया।।''

2. डी. एम. पब्लिक स्कूल-(क) ईश वन्दना गायन प्रतियोगिता। (ख) सुलेख प्रतियोगिता (ग) प्रार्थना गायन प्रतियोगिता।

3. सरकारी कन्या सी. से. स्कूल0(क) संस्कृत सुलेख प्रतियोगिता (ख) पथ संचलन गीतम् प्रतियोगिता।

4. स्वामी दयानन्द माडल स्कूल-ओंकार महिमा गायन प्रतियोगिता।

5. डी. सी. डी. ए. वी. सी. से. स्कूल-वेदमन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता।

6. सर्वहितकारी विद्या मन्दिर-(क) प्राइमरीग्रुप-संस्कृत शिशु गीतम् प्रतियोगिता (ख) धर्मशास्त्रीय श्लोक गायन प्रतियोगिता।

7. इक जोत पब्लिक स्कूल-(क) कलात्मक गायत्री सुलेखन प्रतियोगिता (ख) महर्षि दयानन्द चित्रावली प्रतियोगिता।

8. एस. डी. सी. से. स्कूल-गीता श्लोक गायन प्रतियोगिता।

9. कौटिल्य इण्टरनेशनल पब्लिक स्कूल-(क) मातृभूमि वन्दना गायन प्रतियोगिता (ख) सीमा के प्रहरी-सामूहिक गायन प्रतियोगिता।

10. सरस्वती विद्या मन्दिर-(क) सरस्वती वन्दना गायन प्रतियोगिता। (ख) मौखिक गायत्री सुलेखन प्रतियोगिता। (ग) शान्तिपाठ-संस्कृत हिन्दी सामूहिक गायन प्रतियोगिता।

11. रेनबो डे बोर्डिंग स्कूल-(क) गोमाता गायन प्रतियोगिता। (ख) आरती हिन्दी की-गायन प्रतियोगिता।

12. चाणक्य स्कूल-वाल्मीकि रामायण श्लोक गायन प्रतियोगिता।

## पृष्ठ 2 का शेष-हम अपने जीवन की मलिनता हटाएं

भोजन को करने का उद्देश्य एक मात्र यह ही होता है कि हमारा शरीर शक्ति सम्पन्न व शान्ति से भरपूर हो।

५. हम शुद्ध हो प्रभु का संगतिकरण करें-मन्त्र का उपदेश है कि हम प्रभु से संगतीकरण करें, हम प्रभु का साथ बनावें, हम प्रभु से निकटता बनावें, किन्तु कैसे ? हम प्रभु का संगतिकरण किस प्रकार कर सकते हैं ?, इस पर भी मन्त्र प्रकाश डालते हुए हमें कुछ मार्ग बताता है।

**अपने को शुद्ध करें**

मन्त्र बता रहा है कि हम सर्व प्रथम अपने को अथवा अपनी आत्मा को शुद्ध करें, पवित्र करें। इस शुद्धता व पवित्रता लाने के लिए यह ज्ञिचित है कि हम अपने प्रयोग में, उपभोग में आने वाले प्रत्येक पदार्थ के प्रयोग के लिए इस भावना को बनाए रखें कि पहले हम ने यज्ञ करना है तथा फ़िर यज्ञशेष को ही अपने लिए प्रयोग करना है। ऐसा करने से ही तुम्हारी शुद्धि होगी, ऐसा करने से ही प्रभु से संगतिकरण होगा। ऐसा करने से ही उस पिता की संगति, समीपता, निकटता व साथ प्राप्त होगा। हमारे इतिहास पुरुष सदा ही ऐसा ही करते आये हैं। हमें भी उनका अनुसरण करना है। इस प्रकार के साधनों को अपनाने सेराजा जनक ने अनेक सिद्धियां प्राप्त की थीं, हे जीव ! तुम भी ऐसे ही उपाय करो, जिन से उस प्रभु की निकटता तुम्हें मिल सके।

६. आत्मशुद्धि के लिए कर्म करो-हम ने अपनी आत्म शुद्धि करना है क्योंकि आत्मशुद्धि के बिना प्रभु का सानिध्य प्राप्त नहीं हो सकता। हम जब प्रभु की निकटता पाने का यत्न कर रहे हैं तो हमारे लिए आत्मशुद्धि आवश्यक है। जब तक आत्मशुद्धि नहीं हो जाती, तब तक हम प्रभु के निकट नहीं जा सकते। इसलिए हम यत्न पूर्वक आत्मशुद्धि के कार्यों को, विधियों को, साधनों को अपनाते हैं। जब हम अपने आप को दिव्य कार्यों में लगा देंगे, उत्तम कार्यों के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देंगे तो हमारे अन्दर की सब मलिनताएं, सब दोष, सब गन्दगी धुल जावेगी और हम शुद्ध व पवित्र हो प्रभु का आशीर्वाद पाने के अधिकारी बन जावेंगे। हम जानते हैं कि संसार के जितने भी योगी हुए हैं, वह सदा आत्मशुद्धि के लिए कर्म करते रहे हैं। हम भी इस प्रकार के कार्मों में ही लगें।

७. प्रभु सब का शोधन करते हैं-जब हम प्रयत्न पूर्वक अपना शोधन करने में जुट जाते हैं, जब हम केवल यज्ञशेष को ही ग्रहण करते हैं, जब हम परोपकार के कार्यों को अपनाते हैं तो प्रभु कहते हैं कि मेरे लिए फ़िर सम्भव ही नहीं है कि हे जीवन ! मैं तुझे दोषमुक्त न कर सकूं अर्थात् अब मैं तुझे शुद्ध करता हूं, पवित्र करता हूं। अब तू पूर्ण संस्कारित हो चुका है। अब मैं तुझे मेरी संगति में आने का, मेरे निकट आने का अधिकार देता हूं।

## पृष्ठ 4 का शेष-वैदिक वाङ्मय में देवता

और महेश को देवता मानते हैं और भगवान् रामचन्द्र श्री कृष्ण और बुद्ध को विष्णु का अवतार मानते हैं। यहाँ सोचने की बात यह है कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव अथवा महेश परमात्मा के नाम है जो उसके गुणों उत्पादक रक्षक और प्रलपकर्ता गुणों के द्योतक हैं।

परन्तु इन्हीं के नाम के तीन राजा भी हुए है। तिब्बत में इनके राज्य थे। शिव का राज्य कैलाश पर था तथा ब्रह्मा और विष्णु के राज्य मानसरोवर झील के दक्षिण और उत्तर में थे। जब भी आर्यावर्त पर कोई संकट उपस्थित होता था तो आर्य शासक इनसे सहायता की याचना करते थे और वे आकर समस्या को सुलझा देते थे। इसलिए लोग उन्हें भगवान् नाम से सम्बोधित करते थे। सामान्य रूप से भगवान् उसे कहते हैं जो षट् ऐश्वर्य से सम्पन्न हों, वे छः ऐश्वर्य हैं-शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान उपनिषदों में सामान्य रूप से गुरूकुलों के आचार्यों के लिए भी भगवान शब्द का प्रयोग हुआ। अध्ययन की कमी से सामान्य लोग इनके माता-पिता का नाम नहीं जानते है इसलिए मान लेते हैं कि ये अज है। फिर पुराणों में इनके चरित्र का हरण किया गया है इससे ये मान लिया गया है कि ये दुराचारी थे। परन्तु शास्त्रों में इनको उज्ज्वल चरित्र का दिखाया गया है।

# मुक्तक

**-महात्मा चैतन्य मुनि**

हमने अंग अंग कटवाए हैं रखकर शमशीरों पर,
जीवन की घड़ियां जी है हमने तदवीरों पर।
जिन्हें अपने बाजुओं पर भरोसा नहीं होता-
वही लोग जीते हैं इन हाथों की लकीरों पर।।

तेरी तकदीर बिगड़ेगी यदि कहीं रुक जाऐगा।
हार मानने वालों के यहां न कभी सुख आऐगा।
तू पक्के ईरादे से जरा उड़ान भर कर तो देख-
ये गगन निश्चित तेरे कदमों में झुक जाऐगा।।

गम जो भी मिले राह में उन्हें अपना बना लिया,
करके बर्बाद मगर, हमें ये कैसा सिला दिया।
विरानों को संवारने में बीता दिया जीवन-
अपनी आंखों का समुद्र पलकों में ही छुपा लिया।।

लोग दावं लगा रहे जीवन का किसी व्यापार की तरह,
ज़िन्दगी हो गई सबकी जैसी किसी के उधार की तरह।
जाने दुनियां जीती है जीवन कैसे कैसे मगर-
हमने तो यह जीवन जी लिया किसी अवतार की तरह।।

## श्री रणजीत आर्य दूसरी बार आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के प्रधान बने

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का रविवार को वार्षिक निर्वाचन हुआ जिसमें श्री रणजीत आर्य को दूसरी बार आर्य समाज का सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया। चुनाव अधिकारी ओम प्रकाश मेहता एवं अश्विनी डोगरा जी सेवा निवृत्त दूरदर्शन अधिकारी की अध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग 107 सभासदों ने भाग लिया। श्री चमन लाल जी ने श्री रणजीत आर्य का नाम प्रधान पद के लिये मनोनीत किया जिस का अनुमोदन श्री राज कुमार मागों, चौधरी हरी चंद, भूपेन्द्र उपाध्याय, श्री सुरिन्द्र अरोड़ा, श्री सुभाष मेहता ने अनुमोदन किया।

## 10वीं का परिणाम शत प्रतिशत रहा

*दयानन्द पब्लिक स्कूल का दसवीं कक्षा का बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। स्कूल के सभी छात्रों ने 80% से अधिक अंक प्राप्त किए। स्कूल की छात्रा तनवीर ने 84% अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान एवं द्वितीय स्थान सुखदेव तथा राजकुमार ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रिंसीपल मैडम एवं प्रबन्धकीय कमेटी के सदस्यों ने होनहार छात्र/छात्राओं को बधाई दी एवं उनका मुंह मीठा करवाया। प्रिंसीपल मैडम ने बच्चों की इस शानदार सफलता का श्रेय उनके अध्यापकों एवं अभिभावकों को दिया। बच्चों के जीवन के हर क्षेत्र में लगन से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।*

*-प्रिंसीपल दयानन्द पब्लिक स्कूल, लुधियाना*

# कार्यकर्त्ता नवांशहर महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं : सुदर्शन शर्मा

## जिन परिवारों में मां-बाप की सेवा होती है उन्हें अन्य तीर्थों पर जाने की जरूरत नहीं : स्वामी विशोका यति

पारिवारिक समारोह में श्री राजिन्द्र बेरी विधायक को सम्मानित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा। ( चित्र एक ) एवं चित्र दो में श्री संतोख चौधरी सांसद को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं चित्र तीन में आर्य समाज के सदस्य यजमानों को सम्मानित करते हुये।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने वेद प्रचार की कड़ी को एक कदम आगे बढ़ाते हुए आर्य रत्न व पूर्व पार्षद सरदारी लाल के निवास भार्गवकैंप में हवन-यज्ञ का आयोजन किया। इस दौरान स्वामी विशोका यति ने बड़ी श्रद्धा से वैदिक रीति के अनुसार यज्ञ में आहुतियां डलवाईं।

इस मौके पर सांसद संतोख चौधरी, विधायक बावा हैनरी, विधायक राजिन्द्र बेरी, सभा के प्रधान सुदर्शन शर्मा, नगर निगम में विपक्ष के नेता जगदीश राजा, पार्षद बलराज ठाकुर विशेष तौर पर आशीर्वाद लेने पहुंचे। स्वामी यति ने अपने प्रवचनों में बताया कि जिन परिवारों में मां-बाप की सेवा होती है व यज्ञ होते रहते हैं उन्हें अन्य तीर्थों पर जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि मां-बाप की सेवा ही सबसे बड़ा पुण्य कर्म होता है।

सांसद चौधरी ने कहा कि आर्य समाज के नियम व शिक्षाओं के प्रसार से समाज में सुधार आया है। विधायक बेरी ने कहा कि पंजाब सरकार के नशों के खात्मे को लेकर चलाए अभियान में आर्य समाज का सहयोग इस कोढ़ को समाज से खत्म करने में सहायक सिद्ध होगा। विधायक हैनरी ने कहा कि आर्य समाज ने देश की आजादी में बड़ा योगदान दिया है।

उन्होंने कहा कि विधवा विवाह को आर्य समाज ने शुरू करवाया था और बाल विवाह पर बैन लगाने में सरकार को मजबूर किया था। सुदर्शन शर्मा ने कहा कि वेद प्रचार के लिए सभी कार्यकर्ता एकजुट होकर नवम्बर में नवांशहर में होने वाले प्रादेशिक सम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं। सरदारी लाल व सभा के प्रदेश सचिव सुदेश कुमार ने आए यजमानों को स्मृति चिन्ह भेंट कर समानित भी किया। अंत में भक्तों के लिए अटूट लंगर का आयोजन किया गया।

इस मौके पर सभा के कोषाध्यक्ष सुधीर शर्मा, रजिस्ट्रार, अशोक परूथी, राजकुमार प्रधान आर्य समाज, भार्गव नगर, पं. मनोहरलाल, विशम्बर कुमार, पूर्व पार्षद गुलशन शर्मा, कंचन शर्मा, रमेश आर्या, वेद आर्या व अन्य भी मौजूद थे।

# तपोवन वैदिक आश्रम देहरादून की धार्मिक यात्रा

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ( दाल बाजार ) लुधियाना के आर्य जन जो तपोवन वैदिक आश्रम देहरादून की धार्मिक यात्रा पर रवाना हुए।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) के महामंत्री आर्य श्री सुरेंद्र टण्डन जी के प्रयास द्वारा सभी आर्यजनों के सहयोग से विशेष स्त्री आर्य समाज दाल बाजार के सहयोग से तपोवन वैदिक आश्रम देहरादून के लिए यात्रा निकाली गयी जिसमें 60 आर्यों का जत्था वैदिक यात्रा के लिए रवाना हुआ यह यात्रा 5 दिन की 10 मई रात से शुरू होकर 15 मई सुबह लुधियाना वापिस प्रस्थान की। यह यात्रा वेद प्रचार प्रसार का महत्वपूर्ण साधन रही। जिसमें स्त्री समाज की भजन मंडली श्री मति शशि आहूजा, श्री मति किरण टण्डन, श्रीमति बाला गंभीर, श्री मति बाला चोपड़ा, श्री मति बॉबी, माता सुलक्षणा, श्रीमति संयोगिता महाजन, श्रीमति माला, श्री मति रेनू वधवा, श्रीमति पूनम शर्मा, श्रीमति शांता महाजन, श्रीमति शुभ लता भंडारी द्वारा यात्रा में ऋषि दयानंद जी के भजनों से सभी को मन मोहित कर दिया। यह यात्रा सुबह 10 बजे आर्य समाज हरिद्वार में पहुंची। वहां विश्राम स्नान और भोजन करने के पश्चात सायं 5 बजे यात्रा बस द्वारा तपोवन वैदिक आश्रम को रवाना हुई। आर्य समाज हरिद्वार के अधिकारियों का और पुरोहित का पूरा सहयोग आर्यो को मिला। हरिद्वार से देहरादून यात्रा में आर्य वेद प्रकाश महाजन जी, आर्य मास्टर अनिल कुमारजी, आर्य अश्वनी कुमार महाजन जी, आर्य सुशील महाजन जी द्वारा, आर्य चरणजीत पाहवा जी द्वारा सुन्दर वैदिक भजन प्रस्तुत किये गए। यात्रा 7 बजे तपोवन वैदिक आश्रम पहुंची। वैदिक तपोवन आश्रम के महामंत्री और अग्निहोत्र परिवार जी का आश्रम में ठहरने का प्रबंध और व्यवस्था बहुत अच्छी थी सभी ने इसको सराहा 12 मई यज्ञ के पश्चात पार्क में बैठकर आर्य समाज दाल बाजार की भजन मंडली में आर्य सुभाष अबरोल जी, आर्य संजीव चड्ढा जी, आर्य रमाकांत महाजन जी, आर्य इंद्र कुमार मक्कड़ जी, आर्य सुरेंद्र टण्डन जी द्वारा मधुर भजन सुनाए गये। 13 मई को प्रात: यज्ञ के बाद आर्य ऋषियों की तपस्थली कालापानी पहाड़ों में बस द्वारा पहुंचें वहां हवन यज्ञ के बाद भजन उपदेश हुए प्रातराश दिया गया यज्ञशाला बहुत ही सुंदर और मनमोहक बनी थी। दोपहर 1 बजे यात्रा वापिस तपोवन के लिए रवाना हुई। आर्यों ने सुबह शाम के प्रोग्राम में यज्ञ वेद भजन और उपदेश को सुना और बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

13 मई सायं के प्रोग्राम में आर्य सुरेंद्र टण्डन जी को उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए स्मानित किया गया। लुधियाना से आर्य रमाकांत महाजन, आर्य वेद प्रकाश भंडारी जी, आर्य सुरेश चड्ढा जी, आर्य राजेश मरवाहा जी, श्रीमति रीटा अबरोल जी, आर्य भानू जी, आर्य राज कुमार कपूर जी, श्रीमति नीलम रानी कपूर, वैद्य श्याम सुंदर आर्य जी, आर्य श्री वेद प्रकाश कपूर जी, आर्य सुरेश खन्ना, आर्य राकेश कुमार जी आर्य श्री वीरेंद्र शर्मा जी, आर्य अनिल सहगल जी, आर्य धर्मवीर सोहना जी का विशेष सहयोग रहा आर्य गगन कुमार जी द्वारा फोटोग्राफी में विशेष सहयोग रहा। यह यात्रा 14 मई सायं तपोवन से चलकर 15 मई प्रात 5 बजे लुधियाना पहुंची।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।